सारा संसार हमारा परिवार है

एक बार सुथरे शाह जी (जलज्योति शाह जी) गुरु दरबार में बैठे हुए थे। भाई भगीरथ ने कहा, भाई सुथरे शाह! तुमने सारी आयु गुरु घर की सेवा में बिता दी। हमेशा दूसरों का उपकार किया, जहाँ- जहाँ कोई बुराई देखी वहीं पर 'हरदम नानक शाह धर्म दा बेड़ा बन्ने ला' कहकर वहाँ पहुँच गए। कुरीतियों का नाश किया। अत्याचारों का विरोध किया। दूर - दूर जाकर सबको नानक नाम का उपदेश देकर कृतार्थ किया। सत्गुरु ने गृहस्थ को सबसे उत्तम माना है। भाई गुरुदास जी ने भी 'सकल धर्म में गृहस्थ प्रधान है' कहा है, फिर तू विवाह करके गृहस्थ को धारण क्यों नहीं करता?

भाई भगीरथ का वचन सुनकर 'सुथरे शाह' हँस पड़े और कहने लगे - भाई साहब! हमने गृहस्थ धर्म का त्याग भी तो नहीं किया। जहाँ भी जाते हैं आसपास गृहस्थी ही तो रहते हैं। हम शहर छोड़ कर जंगल में तो नहीं चले गए। हम तो यह समझते हैं कि जितना भी बंधन डालो जीव उसमें फँसता चला जाता है। यह तो मोहमाया है। हम गृहस्थियों और गृहस्थ में रहते हुए मोह माया के बंधनों से अलग रहना चाहते हैं, परन्तु गृहस्थ का त्याग नहीं किया। अगर गृहस्थ का त्याग नहीं किया तो आपका परिवार कहाँ है ? भाई साहब ने पूछा।

यह संसार हमारा परिवार है। हम इसी परिवार में रहकर खुश हैं। आप निरंकार ने हमें जन्म दिया है। हमें पालने के लिए निरंकार को मीरी पीरी का रूप धारण करना पड़ा। अब हमने दुबारा जन्म तो लेना नहीं। अगर किसी और झंझट में पड़ जाते तो ८४ लाख जन्मों का फेर फिर तैयार मिलता। हम तो यह समझते हैं —

नानक शाह दा नाम है, इस जीवन दा तथ ।
बिन हरि नाम न जानदे, कोई गल न कथ ।
एहो मार्ग है सच्च दा, एहो सुच्चा है पथ ।
लोकी भावे कहन पए, 'सुथरा' निरा उलथ ।
पर साहिब ने पा लई नॅक असाडे नथ ।
ज्यों नचावे नच्चिए, होर न कोई सथ ।
पुत्र धीयां फाइयां, देन्दे जीवन मथ ।
असी ते सुथरे शाह हां, बेडर ते सिरलथ ।
शाह नू शाह ने बकशिया, बेफिक्री दा रथ ।
जान्दी वारी सुथरिया, रख छाती ते हथ ।
हस खेड के चलना, ओस अनोखे पथ ।
नानक शाह तो सुथरिया, लई अमोलक वथ ॥

इस लिए भाई साहब हमने गृहस्थ के झंझटों में फँसकर क्या लेना है। न हम गृहस्थ में पड़े न ही कोई ऐसा कार्य किया जिससे आने जाने के फेर में पड़ा जा सके । हम पर हमारे सत्गुरु ने मेहर की, जीवन दिया, हमें 'सुथरा' बनाया । इसलिए हमने इस संसार में रहकर जीवन व्यतीत किया और सुथरे रहकर ही सचखण्ड में चले जायेंगे। सुथरे शाह जी की ऐसी बातें सुनकर भाई भगीरथ की आँखों में आँसू आ गए ।